

## Table of Contents

- त्रिलोचन का परिचय
- चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती कविता का विश्लेषण
- शब्दावली और प्रमुख शब्दों का मतलब
- अभ्यास प्रश्न
- अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
- त्वरित संदर्भ

## त्रिलोचन का परिचय

त्रिलोचन का मूल नाम वासुदेव सिंह था। उनका जन्म सन् 1917 में चिरानी पट्टी, जिला सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। वे हिंदी साहित्य के प्रगतिशील काव्य धारा के प्रमुख कवि माने जाते हैं। त्रिलोचन भाषा बोलचाल की भाषा के समान सरल, चुटीली और नाटकीय है। वे बहुभाषाविज्ञ शास्त्री भी थे, लेकिन उनकी कविताओं में शास्त्रीयता बोझ नहीं बनती। त्रिलोचन की कविताओं में जीवन के यथार्थ और ग्रा

## प्रमुख रचनाएँ

- धरती, गुलाब और बुलबुल
- दिगंत
- ताप के ताप हुए दिन
- शब्द
- उस जनपद का कवि हूँ
- अरथान
- तुम्हें सौंपता हूँ
- चैती
- अमोला
- मेरा घर
- जीने की कला (काव्य)
- देशकाल, राजनामचा, काव्य और अर्थवेद, मुक्तिबोध की कविताएँ (गद्य)

## प्रमुख सम्मान

- साहित्य अकादमी पुरस्कार
- शलाका सम्मान
- महात्मा गांधी पुरस्कार (उत्तर प्रदेश)

त्रिलोचन का निधन सन् 2007 में हुआ।



## चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती कविता का विश्लेषण

यह कविता त्रिलोचन की प्रसिद्ध कविता है जो उनके संग्रह "धरती" में संकलित है। यह कविता पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से प्रस्तुत करती है। कविता की नायिका चंपा एक ग्रामीण लड़की है जो "अच्छर" शब्दों का प्रयोग शिक्षा व्यवस्था की कठिनाइयों और आर्थिक मजबूरियों को दर्शाता है। चंपा की भाषा सरल और भावपूर्ण है, जो ग्रामीण जीवन की सच्चाई को उजागर करती है।

### कविता का सारांश

कवि अपने पढ़ने के समय चंपा को देखते हैं जो चुपचाप उनके पढ़ने को सुनती है। चंपा अक्षर नहीं पहचानती और उसे यह सब अचरज भरा लगता है। वह पढ़ाई में रुचि नहीं रखती और कभी-कभी कलम चूबारे में समझाने की कोशिश करता है, लेकिन चंपा पढ़ाई से इनकार कर देती है। वह अपने बालम (पति) के साथ रहना चाहती है और कहती है कि वह कभी पढ़ेगी नहीं। चंपा की यह बात उस सामाजिक यथार्थ सामाजिक बाधाएँ होती हैं।

### कविता के मुख्य बिंदु

- चंपा की सरल और ग्रामीण भाषा
- शिक्षा के प्रति चंपा का विरोध और सामाजिक यथार्थ
- पलायन और आर्थिक मजबूरियों का चित्रण
- कवि का चंपा को पढ़ाई के लिए प्रेरित करना
- चंपा की जिद और उसकी भावनाएँ

### महत्वपूर्ण पंक्तियाँ और व्याख्या

- "चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती" - अक्षरों को न पहचानना, शिक्षा की कमी को दर्शाता है।
- "कलकत्ते पर बजर गिरे" - यह वाक्य चंपा की मनोस्थिति और जीवन की कठिनाइयों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया को दर्शाता है।
- "मैं तो ब्याह कभी न करूँगी" - चंपा की जिद और अपने बालम के प्रति प्रेम को प्रकट करता है।



## शब्दावली और प्रमुख शब्दों का मतलब

- चीन्हती - पहचानती
- चीन्हों - चिह्नों, अक्षरों
- चौपायों - चार पैरों वाले जानवर (गाय-भैंस)
- कागद - कागज़
- हारे गाढ़े काम सरेगा - कठिनाई में काम आएगा
- बालम - पति
- बजर गिरे - वज्र गिरे, भारी विपत्ति आए

## अभ्यास प्रश्न

### स्तर 1 - सरल

- चंपा कौन है और वह क्या नहीं जानती?
- कवि त्रिलोचन का जन्म कहाँ हुआ था?
- "काले काले अच्छर" से क्या अभिप्राय है?

## स्तर 2 – मध्यम

- चंपा की शिक्षा के प्रति क्या दृष्टिकोण है? इसे विस्तार से समझाइए।
- कविता में पलायन और आर्थिक मजबूरियों का चित्रण कैसे किया गया है?
- त्रिलोचन की भाषा की विशेषताएँ क्या हैं?

## स्तर 3 – कठिन

- "कलकत्ते पर बजर गिरे" पंक्ति का क्या अर्थ है और यह चंपा के जीवन में किस प्रकार की भावनाएँ व्यक्त करती है?
- त्रिलोचन की कविता में ग्रामीण जीवन की झलक किस प्रकार मिलती है? उदाहरण सहित समझाइए।
- चंपा की जिद और उसकी भावनाओं का सामाजिक संदर्भ क्या है?

## अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

### स्तर 1 – सरल

- **चंपा कौन है और वह क्या नहीं जानती?**  
चंपा एक ग्रामीण लड़की है जो "काले काले अच्छर" यानी अक्षर नहीं पहचानती।
- **कवि त्रिलोचन का जन्म कहाँ हुआ था?**  
त्रिलोचन का जन्म सन् 1917 में चिरानी पट्टी, जिला सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था।
- **"काले काले अच्छर" से क्या अभिप्राय है?**  
यह शिक्षा व्यवस्था की कठिनाइयों और अक्षरों को न पहचानने की स्थिति को दर्शाता है।

### स्तर 2 – मध्यम

- **चंपा की शिक्षा के प्रति क्या दृष्टिकोण है? इसे विस्तार से समझाइए।**  
चंपा पढ़ाई में रुचि नहीं रखती और कहती है कि वह पढ़ेगी नहीं। वह अपने बालम के साथ रहना चाहती है और शिक्षा को अनावश्यक मानती है। यह दृष्टिकोण ग्रामीण जीवन की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को दर्शाता है।
- **कविता में पलायन और आर्थिक मजबूरियों का चित्रण कैसे किया गया है?**  
कविता में चंपा के परिवार की आर्थिक स्थिति और पलायन की समस्या को मार्मिकता से प्रस्तुत किया गया है। चंपा के शब्द "कलकत्ते पर बजर गिरे" में जीवन की कठिनाइयों और विपत्तियों का संकेत मिलता है।
- **त्रिलोचन की भाषा की विशेषताएँ क्या हैं?**  
त्रिलोचन की भाषा सरल, बोलचाल की भाषा जैसी, चुटीली और नाटकीय है। उनकी कविताओं में ग्रामीण जीवन की सच्चाई स्पष्ट रूप से मिलती है।

### स्तर 3 – कठिन

- **"कलकत्ते पर बजर गिरे" पंक्ति का क्या अर्थ है और यह चंपा के जीवन में किस प्रकार की भावनाएँ व्यक्त करती है?**  
यह पंक्ति चंपा की मनोदशा और जीवन की कठिनाइयों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया को दर्शाती है। यह विपत्ति और संकट की कामना है जो उसके जीवन की जद्दोजहद को प्रकट करती है।
- **त्रिलोचन की कविता में ग्रामीण जीवन की झलक किस प्रकार मिलती है? उदाहरण सहित समझाइए।**  
त्रिलोचन की कविताओं में ग्रामीण जीवन की भाषा, पात्र और उनके संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखते हैं। उदाहरण के लिए, चंपा की भाषा और उसके चरवाहे काम से ग्रामीण जीवन की सजीव छवि मिलती है।
- **चंपा की जिद और उसकी भावनाओं का सामाजिक संदर्भ क्या है?**  
चंपा की जिद उसके सामाजिक परिवेश और आर्थिक बाधाओं का परिणाम है। वह शिक्षा से दूर रहना चाहती है क्योंकि उसे लगता है कि इससे उसका पारंपरिक जीवन प्रभावित होगा। यह ग्रामीण समाज की स्थिति को दर्शाता है।

## त्वरित संदर्भ

- त्रिलोचन हिंदी के प्रगतिशील कवि थे।
- चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती कविता शिक्षा और सामाजिक यथार्थ को दर्शाती है।
- कविता की भाषा सरल और ग्रामीण है।
- चंपा की जिद और भावनाएँ सामाजिक बाधाओं को उजागर करती हैं।
- "कलकत्ते पर बजर गिरे" पंक्ति जीवन की कठिनाइयों का प्रतीक है।